ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.- 453-457
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

अंशु कुमारी

NET & JRF, शोधार्थी, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा.

Corresponding Author :

अंशु कुमारी

NET & JRF, शोधार्थी, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा.

गिरमिटिया प्रवासी की हिन्दी सेवा

शोध सार : 19 वीं शताब्दी में ब्रिटिश उपनिवेशवादी शासकों ने शर्तबंदी प्रथा के अंतर्गत भारतीय मजदूरों को विश्व के अनेक देशो में भेजा गया। जिनमें मॉरीशस (1834), त्रिनिदाद एवं टोबैगो (1845) सूरीनाम (1873), फिजी (1870), गुयाना (1838), दक्षिण अफ्रिका (1860) आदि प्रमुख है। भारतीय मजदूर मूलतः बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश उड़ीसा, महाराष्ट्र से थे।। इनमें से ये मजदूर "गिरमिटिया मजदूर" कहलाए। गिरमिट मजदूरों ने कठिन परिस्थितियों में जीवन बिताने के बावजूद इन प्रवासी भारतीयों ने भाषा, सांस्कृतिक और परंपराओं को जीवित रखा विदेशी भूमि पर हिन्दी को उन्होंने अपने कलेजे से लगाए रखा त्योहार, विवाह संस्कारों और धार्मिक अनुष्ठानों में हिन्दी का प्रयोग उनकी सांस्कृतिक एकता को मजबूत करता रहा। जिससे मॉरीशस और फिजी जैसे हिंदी देशों में हिन्दी शिक्षा को संस्थागत रूप मिला। प्रवासी लेखकों ने भी अपने साहित्य में मजदूरों, किसानों, युवाओं आदि की समस्याओं को मुखर रूप से उठाया गया है।

बीज शब्द : गिरमिटिया, उपनिवेश, प्रवासी, अत्याचार प्रतिरोध, संघर्ष, धर्म, सामाजिक, सांस्कृतिक, मजदूर, घटनाएं, ब्रिटिश, गुलाम एवं इतिहास।

मूल आलेख : 19वीं शताब्दी में गिरमिटिया प्रथा भारतीय इतिहास का ऐसा दर्दनाक अध्याय है, जो अपने देश से अलग देश में रहकर झेलना पड़ा। जिसमें ब्रिटिश शासक द्वारा भारतीय मजदूर का आर्थिक शोषण और मानवीय अस्मिता का दमन स्पष्ट रूप से दिखलाई देता है। वर्तमान समय में भी इस दर्दनाक दासता के बारे में पढ़ते हैं तो महसूस होती है कि उन श्रमिकों ने अपने

देश, राज्य, समाज और अपना परिवार को छोड़कर अपनी संस्कृति को छोड़कर दूर देश में जाता है और वहां भी भोजन भी नहीं मिलता है जिससे कुछ लोग भूख से भी मर गए एवं स्वास्थ्य संबंधी कोई भी प्राथमिक सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी। ऐसी विषम परिस्थिति में भी अपने भारतीयता को बढ़ाने एवं बचाए रखने के लिए संघर्ष जारी रखा। ब्रिटिश साम्राज्य ने भारत से लाखों मजदूरों को एग्रीमेंट के तहत वर्क परमिट जो बाद में गिरमिट के माध्यम से मॉरीशस फिजी, सूरीनाम, किनिदाद, गुयान आदि देशों में ले जाया गया। इस गिरमिटिया प्रथा की आवश्यकता ब्रिटिश सत्ता को क्यों पड़ा इसका मूल कारण यह है कि 1834 में दास प्रथा की समाप्ति के ब्रिटिश साम्राज्य को सस्ते श्रम की आवश्यकता पड़ी। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए अमानवीय प्रथा गिरमिटिया प्रथा को तैयार किया। भारत के उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, उड़ीसा और तमिलनाडु से श्रमिकों की भर्ती के लिए ले जाया गया। बिहार और उत्तर प्रदेश से सबसे अधिक मजदूर गिरमिट बने क्योंकि ब्रिटिश सत्ता के समय भी इन राज्यों में भी गरीबी और भुखमरी की स्थिति बनी हुई थी और अत्यधिक संख्या में अपने आर्थिक स्थिति को देखकर उसमें सुधार की सपना लेकर गिरमिट मजदूर सहज रूप से बनने के लिए तैयार हो गए थे। इन श्रमिकों को पांच वर्ष के अनुबंध पर विदेशी भेजा जाता था और प्रत्येक महीने ₹8 मासिक राशि के तौर पर दिया जाता इस तरह से अनुबंध पर श्रमिकों भारी संख्या में भारत से लेकर गया। यह व्यवस्था केवल एग्रीमेंट के कागज पर वैधानिक थे परंतु व्यवहारिकता में ठीक इसके उल्टा था वहां जाने के क्रम में ही शोषण का भयावाह कहर का सामना करना पड़ा क्योंकि लंबी यात्रा के बाद ही फिजी, त्रिनिनाद, मॉरीशस जैसे देशों में पहुंचा जा सकता था यात्रा के दौरान ही भोजन की कमी से लेकर स्वास्थ्य का भी बिल्कुल नहीं ध्यान नहीं रखा जाता है जिसके कारण काफी मजदूरी यात्रा के दौरान ही मृत्यु हो गई थी। इसके बाद संघर्ष का नया अध्याय विदेश पहुंचने के पश्चात शुरू हुआ जो पीड़ा एवं अपनी अस्मिता की दर्द को बयां करती है, श्रमिकों से अत्यधिक घंटे तक खेतों में काम कराया जाता सुबह से शाम तक काम ही काम एवं भोजन के नाम पर एक या दो ब्रेड दिया जाता था जिससे शरीर शारीरिक क्षमता भी धीरे-धीरे भोजन की कमी के कारण घटते गया और कमजोर पड़ते गया। श्रमिकों ने गिरमिट दास्तान को झेला परंतु अपने संस्कृति को अपने भीतर संजोय कर रखा। अधिकांश गिरमिटिया श्रमिक समाज के वंचित दलित और पिछले वर्गों से ही थे जातिगत उत्पीड़न गरीबी और बेरोजगारी ने उन्हें इस प्रथा का शिकार बनाया।

“तुमने आदमी को खाली पेट दिया
ठीक किया
पर एक प्रश्न है रे नियति
खाली पेट वालों को
तुमने घुटने क्यों दिये ?
फैलानेवाला को हाथ क्यों' दिया ?

वास्तव में ये कविताएँ अपने आप में संपूर्ण हैं। आम आदमी के जीवन से सरोकार रखने वाली कविताएँ हैं।”[1]

प्रवास के बाद जाति संरचनाओं ढीली परी पर सामाजिक समस्या समाप्त नहीं हुआ। क्योंकि ब्रिटिश

उपनिवेश ने भारतीय मजदूर को ही दूसरे देश ले गया क्योंकि मजदूर गरीब व वंचित समाज के ही व्यक्ति होते थे। क्योंकि दलित वंचित वर्ग के लोगों को भारत में भी रहने पर उसे गरीबी और भुखमरी का शिकार होना पड़ता था और ब्रिटिश सत्ता ने उसे अत्यधिक मजदूरी की राशि देने का प्रलोभन दिया जिसके कारण वे लोग अपने स्वेच्छा से हि गिरमिट मजदूर बनने के लिए तैयार हो गए थे।

अभिमन्यु अनत की कविताओं में अधिकतर मजदूरों की शोषण अन्य अत्याचार तथा दमन को रेखांकित किए हैं उन्होंने अपनी पीढ़ी के दर्द को ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत किए हैं ताकि आगे आने वाली पीढ़ी को ऐतिहासिक तथ्यों के रूप में इस साहित्यिक रचनाएं उन्हें अपने पूर्वजों की संघर्ष एवं पीड़ा को समझ सकते हैं।

"मेरे पूर्वजों के साँवले बदन पर
जब बरसे थे कोड़े
तो उनके चमड़े
लहुलूहान होकर भी चुप थे
चीत्कार तो था
गोरे का कोड़ा ही
और आज भी
कई सीमाओं पर बदूकें ही तो चिल्ला-कराह रही हैं
मुखे नागरिक तो
'शांत सो रहे हैं
गोलियाँ खाकर।"[2]

भारतीय श्रमिक जो गिरमिट बनकर गए थे उनमें लगभग मजदूर अशिक्षित थे जिसके कारण अपनी भाषा हिंदी, अवधी, भोजपुरी में ही बात करते थे। वहां पर रहकर भी आपस में सभी मजदूर हिंदी में ही बात करते थे अंग्रेजी सीखना उनके लिए कठिन था और नहीं बोल पाते थे। बिहार एवं उत्तर प्रदेश के लोग अवधी, भोजपुरी एवं ब्रज में अपना संवाद स्थापित करते थे। जिससे वर्तमान समय में भी वहां हिंदी भोजपुरी भाषा कायम है। उपनिवेशिक शासन ने अंग्रेजी को सत्ता की भाषा बनाया और भारतीय भाषा को हीन दृष्टि से देखा और खारिज कर दी।गिरमिटिया मजदूरों को भी अंग्रेजी भाषा को अपनाने के लिए दबाव बनाया पर वे हिंदी को अपने गले से लगा कर रखा हिंदी केवल संवाद की भाषा नहीं बल्कि स्मृति, संवेदना और सांस्कृति पहचान का माध्यम थी। हिंदी उन गिरमिटिया मजदूरों के लिए पीड़ा को सहने एवं उबरने की शक्ति प्रदान करती थी। अगर जब हिंदी भाषा वहां ठहरी रही तो साथ में भोजपुरी अवधी और ब्रज जैसी हिंदी के छत्रछाया में जीवित रही।भारत से जाते समय श्रमिकों ने अपने साथ तुलसी के रामचरितमानस हनुमान चालीसा एवं मौखिक लोकगीत कथाएं को अपने साथ ले गए।हिंदी के संरक्षण के लिए प्रमुख माध्यम बने कुछ दोहे कहावतें अशिक्षित होने के बावजूद भी मौखिक परंपरा ने हिंदी को पीढ़ी -दर -पीढ़ी पहुंचाया। धार्मिक सांस्कृतिक आयोजनों में हिंदी का महत्व और बढ़ जाता था जब गिरमिटिया समाज को यह लगने लगा कि

भारत से यहां आ गए और फिर भारत वापस लौटना अब संभव नहीं लगता तो अपने कर्म भूमि में धीरे-धीरे व्यवस्थित होने लगे और वहां ही अपने देश की संस्कृति विरासत को जीवित रखने का अथक प्रयास करते रहें रामलीला, होली, दिवाली और सत्संग जैसे आयोजनों में हिंदी का प्रयोग अनिवार्य था इन आयोजनों में अपने गिरमिट समाज के साथ एकत्र होकर अपने भारतीय त्योहारों को मानते रहे एकजुट होकर अपनी भाषा को जीवंत बनाए रखा। बीसवीं शताब्दी आते-आते जो गिरमिट मजदूर बनकर श्गए थे उनका अगला पीढ़ी पढ़ -लिखकर प्रवासी साहित्यकार के रूप में उभरे। कविता, आत्मकथा और नाटक के माध्यम से उन्होंने अपने जीवन संघर्ष को अभिव्यक्त किया। यह साहित्य पीड़ा और प्रतिरोध का साहित्य है मॉरीशस के अभिमन्यु अनंत फिजी के सुभाष चंद्र और सूरीनाम के साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य को समृद्धि किया उनके लेखन में विस्थापन और अस्मिता दिखाई पड़ती है अभिमन्यु अनंत की कविताओं में शोषण दमन और अत्याचार के खिलाफ आवाज बुलंद की गई है बेरोजगारी की समस्या पर भी अनत की दृष्टि गई है। समसामयिक व्यवस्था पर कवि का भावुक हृदय चीत्कार कर उठना है। इनकी कविता की कुछ पंक्ति प्रस्तुत हैं-

जिस दिन सूरज को
मजदूर की ओर से गवाही देनी थी
उसे दिन सुबह नहीं हुई
सुना गया कि
मालिकों के यहां की पार्टी में
सूरज ने ज्यादा पी ली थी

अनंत की कविताओं में मॉरीशस के श्रमिकजीवियों की वेदना उभरती है। उनकी कविता में प्रश्न एवं तर्क दोनों होते हैं और उसके उसका उत्तर की मांग भी करते हैं।

"अनपढ़ लक्ष्मी पर इतना जरूर पूछती रही
पसीने की कीमत जब इतनी महंगी होती है
तो मजदूर उसे इतनी सस्ते क्यों बेच देता है।"[3]

इसमें वर्तमान सामाजिक राजनीतिक विसंगतियों खासकर युद्ध शोषण और मानवीय पीड़ा को दर्शाया गया यहां लक्ष्मी के प्रश्न के माध्यम से व्यवस्था पर व्यंग्य किया जाता है। अभिमन्यु अनत ने मॉरीशस में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के शोषण, संघर्ष, पीड़ा और मॉरीशस के विकास में उनके योगदान की मार्मिक गाथा को 'लाल पसीना, नामक उपन्यास में दर्शाया है, इस उपन्यास में उन्होंने भारतीय गिरमिटिया द्वारा मॉरीशस में हिंदी भाषा को जीवतंता बनाए रखा साथ ही मॉरीशस को भारतीय सांस्कृति से जोड़कर रखा। ऐतिहासिक पात्र के बारे में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है 'लाल पसीना, उपन्यास की कुछ पंक्तियों को यहां प्रस्तुत करते हैं- "कैदियों के बीच बंदीगृह के सिपाहियों के अलग-अलग नाम थे। उनके सही नाम जानना कैदियों के लिए असंभव था, इसलिए उस एक सौ पैंतीस नम्बर का कैदी मरने से पहले सभी को अपने ढंग से नाम दे दिया गया था। किसी को दुः शासन था किसी का जरासंध। वह जो द्वार पर खड़ा-खड़ा उँघने का आदी था उसे सभी कुंभकरण नाम से जानते थे लंबी मूछ वाले सिपाही को कंस मामा का कर पुकारा

जाता था दुबला पतला जो कुछ और रहमदिल था उसे कैदी को विभीषण क कहकर पुकारते थे। विभीषण अपने नाम की तरह जितने और डरावनी सूरत का था भीतर से वह उतना ही कोमल था यह एक सिपाही था जिसे सभी कैदी आदर से देखते थे। उसके पास से गुजरते देख कर कुंदन ने कहा विभीषण भैया नमस्ते”[4]

प्रवासी साहित्यकार और गिरमिटिया श्रमिकों ने अपने भारतीय संस्कृति एवं भाषा को विपरीत परिस्थिति में हिन्दी की बीज बोने का काम किया आज हिंदी वहां राजकीय भाषा के रूप में स्थान ग्रहण की हुई है। गिरमिटिया साहित्य में आत्मानुभूति, अपमानबोध और संघर्ष की स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलती है प्रवासी साहित्य दलित साहित्य की तरह स्व अनुभव को केंद्र में रखता है इस प्रकार प्रतिरोध के साथ वहां अपने अस्तित्व को कायम करता है गिरमिटिया समाज का योगदान हिंदी साहित्य में अमूल्य है।

निष्कर्ष : वर्तमान समय में शिक्षा ज्ञान विज्ञान का प्रसार होने के उपकरणों के माध्यम से विदेश की यात्रा करने लगे और उन सभी ने हिंदी भाषा और संस्कृति का प्रचार प्रचार में अहम भूमिका निभाई। आज गिरमिटिया देश के अलावा विश्व के अनेक देशों में हिंदी बोलने समझने पढ़ने वाले मिल जाता है। भारतीय अस्मिता अधिकारों तथा स्वतंत्रता के संघर्ष का ऐतिहासिक दस्तावेज को अपने साहित्य में जीवित रखा उसे वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान समय में हिंदी का स्वरूप जो विश्व धरातल तक पहुंची है।

सन्दर्भ ग्रंथ :

1. हिन्दी समय . कॉम, कविताकोश, ऑनलाइन साईट
2. खामोश, हिन्दी समय . कॉम, कविताकोश
3. अनत, अभिमन्यू : लक्ष्मी का प्रश्न कविता
4. अनत, अभिमन्यू, लाल पसीना, पृ0 सं0 -30